# प्रधानमंत्री की जर्मनी यात्रा के अवसर पर जारी
# जर्मनी-भारत संयुक्त वक्तव्य

**दिनांक 23 अप्रैल, 2006**
**जर्मनी**

जर्मनी की संघीय चांसलर अंगेला मार्केल और प्रधानमंत्री, डॉ0 मनमोहन सिंह ने आज जर्मनी और भारत की सामरिक साझेदारी की फिर से पुष्टि की। दोनों देशों ने वर्ष 2000 में 21वीं शताब्दी में आपसी भागीदारी के लिए जो एजेण्डा स्वीकार किया था, उसी को आगे बढ़ाते हुए दोनों देश लोकतांत्रिक मूल्यों और मूलभूत साझे हितों पर आधारित सामरिक भागीदारी को और प्रगाढ क़रेंगे।

भारत और जर्मनी की सामरिक साझेदारी के परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच सहयोग द्विपक्षीय मुद्दों के अलावा अन्य मंचों पर भी बढता जा रहा है, जिनमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार से संबंधित जी-4 देशों की पहल भी शामिल है। दोनों पक्ष द्विपक्षीय स्तर पर सहयोग जारी रखने पर और जी-4 व्यवस्था के अंतर्गत बहुस्तरीय प्रणाली को मजबूत करने तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार सहित संयुक्त राष्ट्र में सुधारों के लिए सहयोग जारी रखने पर सहमत हैं ।

दोनों देशों के बीच व्यापार, निवेश, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में सहयोग आपसी साझेदारी के महत्वपूर्ण आधार हैं। प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में सहयोग के लिए बुनियादी ढांचा, ऊर्जा और अंतरिक्ष जैसे उच्च प्रौद्योगिकी वाले क्षेत्र शामिल हैं। दोनों देशों का लक्ष्य अपनी सामरिक और सुरक्षा बातचीत को और पुख्ता करना है तथा दोनों देश द्विपक्षीय रक्षा सहयोग पर करार करने की दिशा में भी काम करेंगे।

जर्मनी और भारत के बीच हाल के वर्षों में आर्थिक और व्यापार संबंध विकसित हुए हैं। इस वर्ष के हैनोवर मेले में साझीदार देश के रूप में भारत की भागीदारी विश्व में आर्थिक भागीदारी के लिए भारत में बढती दिलचस्पी का प्रतीक है और द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को मजबूत करने का एक बहुत अच्छा अवसर है। बुनियादी ढांचा और ऊर्जा, दोनों क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच सहयोग बढ रहा है। औद्योगिक और आर्थिक सहयोग के बारे में भारत-जर्मनी संयुक्त आयोग आपसी हित के लिए सहयोग के विशिष्ठ क्षेत्रों पर ध्यान देता रहेगा। दोनों देश इस बात पर संतोष महसूस करते हैं कि आपसी व्यापार तेजी से बढ रहा है और अक्तूबर 2004 में नई दिल्ली में हुए पिछले शिखर सम्मेलन में पांच वर्ष के अन्दर व्यापार को दुगना करने का जो लक्ष्य रक्षा गया था, उसे समय से बहुत पहले ही प्राप्त कर लेने की संभावना है। दोनों देश व्यापार, पूंजी निवेश और टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में सम्पर्कों को और बढ़ाने में छोटे और मझौले दर्जे के उद्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हैं और ऐसे उद्यमों के बीच सम्पर्कों को और मजबूत करने में सहायता देने को सहमत हैं। भारत और जर्मनी के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत-जर्मनी वाणिज्य मंडल के योगदान की भी दोनों देश सराहना करते हैं। भारत-जर्मनी वाणिज्यमंडल इस वर्ष अपनी 50वीं वर्षगांठ मना रहा है। दोनों देश बंगलौर में जर्मनी का व्यापार कार्यालय खोले जाने का भी स्वागत करते हैं। इससे जर्मनी के व्यापार में और भारत में पूंजी

निवेश में वृद्धि होगी। दोनों देश जर्मनी में बढते भारतीय पूंजी निवेशों का भी स्वागत करते हैं।

इस संदर्भ में दोनों पक्ष भारत-जर्मनी परामर्श समूह के कार्य की भी सराहना करते हैं और आर्थिक तथा व्यापार संबंधों सहित दोनों देशों के बीच सभी प्रकार के संबंधों को और मजबूत बनाने के बारे में उसकी सिफारिशों का भी स्वागत करते हैं।

दोनों पक्ष ऊर्जा, पर्यावरण नीति, सतत आर्थिक विकास, स्वास्थ्य और व्यावसायिक प्रशिक्षण सहित विभिन्न क्षेत्रों में भारत-जर्मनी विकास सहयोग के मूल्यवान योगदान की भी सराहना करते हैं।

वरिष्ठ अधिकारियों के स्तर पर भारत-जर्मनी ऊर्जा फोरम की स्थापना, जिसमें निजी क्षेत्र भी शामिल हैं, इस बात का प्रतीक है कि दोनों देश इस क्षेत्र में आपसी सहयोग को कितना महत्व देते हैं। यह फोरम ऊर्जा संबंधी महत्वपूर्ण मसलों और चिन्ताओं पर गौर करेगी, जिनमें ऊर्जा सुरक्षा, ऊर्जा के बेहतर उपयोग, अक्षय ऊर्जा स्रोतों और पर्यावरण की दृष्टि से उपयोगी तकनीकों के संवर्द्धन जैसे मुद्दे और सतत विकास के संदर्भ में पर्यावरण संबंधी चुनौतियां जैसे मुद्दे शामिल हैं।

दोनों देश यूरोपीय संघ और भारत के बीच ऊर्जा के क्षेत्र में बढते सहयोग से संतुष्ट हैं और सितम्बर, 2005 में नई दिल्ली में छठे यूरोपीय संघ-भारत शिखर सम्मेलन के अवसर पर निर्धारित भारत-यूरोपीय संघ कार्य योजना से भी संतुष्ट हैं, जिसमें उचित मूल्य पर सुरक्षित और निरन्तर ऊर्जा आपूर्ति के लिए सहयोग की व्यवस्था है। फ्यूजन एनर्जी के संबंध में **आईटीईआर** के प्रयासों में भारत की भागीदारी ऊर्जा के क्षेत्र में किए जा रहे सहयोग का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

जर्मनी और भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उपयोगी सहयोग की स्थापना की है। भारत-जर्मनी साइंस सर्किल ने इस सहयोग को नया संबल प्रदान किया है। इससे वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों के बीच सम्पर्कों को और मजबूती मिलेगी। दोनों पक्षों को उम्मीद है कि नई दिल्ली में Deutsche Forschungsgemeinschaft के नए कार्यालय से दोनों देशों की संस्थाओं के बीच निकटता बढ़ेगी। दोनों देश जल्दी ही भारत-जर्मनी विज्ञान, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना की दिशा में कार्य करेंगे। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद और जर्मनी के अनुसंधान केन्द्रों की Helmholtz Association जैव चिकित्सा विज्ञानों के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य में सहयोग के लिए एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर कर रहे हैं।

जर्मनी, यूरोपीय संघ की अध्यक्षता की अपनी अवधि में भारत और जर्मनी के बीच विज्ञान और प्राद्योगिकी में सहयोग पर विशेष जोर देगा। दोनों पक्ष वर्ष 2007 की पहली छमाही में विज्ञान और प्राद्योगिकी पर मंत्रिस्तरीय सम्मेलन आयोजन करने के लिए मिल कर काम करेंगे।

दोनों पक्ष चन्द्रयान परियोजना सहित अंतरिक्ष क्षेत्र में चल रहे आपसी सहयोग से भी संतुष्ट हैं। ग्लोबल नेवीगेशन सैटेलाइट सिस्टम (GALILEO) में भारत की भागीदारी ऐसे सहयोग की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान है।

दोनों पक्ष नियमित द्विपक्षीय परामर्शों और बहुस्तरीय स्तर पर सहयोग के जरिए आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष में सहयोग जारी रखने पर सहमत हैं। विशेष रूप से दोनों देश अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ एक व्यापक संधि के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र में समझौते के लिए सहयोग जारी रखेंगे। दोनों पक्ष आपराधिक मामलों में परस्पर कानूनी सहायता की संधि के बारे में विचार-विमर्श शुरू करने के लिए सहमत हैं और चाहते हैं कि यह विचार-विमर्श जल्दी पूरा हो।

दोनों पक्ष परम्परागत घनिष्ठ सांस्कृतिक सहयोग को भी सक्रियता के साथ आगे बढ़ाने के पक्ष में हैं। मई में बॉन में होने वाले द्विवार्षिक आर्ट फैस्टिवल में प्रमुख देश के नाते और इस वर्ष होने वाले फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेले में अतिथि देश के रूप में भारत की भागीदारी हमारे दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंधों को और घनिष्ठ बनाने वाली महत्वपूर्ण घटनाएं हैं। दोनों देश भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा जर्मनी के विभिन्न विश्वविद्यालयों में सम-सामयिक भारतीय अध्ययनों पर पांच चलित पीठों की स्थापना के फैसले का स्वागत करते हैं।

*******